# तीर्थराज मुचुकुण्द

धौलपुर के जी.टी. रोड से तीन किलोमीटर दूर अरावली पर्वत श्रंखलाओं की गोद में स्थित है सुरम्य प्राकृतिक सरोवर मुचुकुण्द। इसे पूर्वाचल का पुष्कर कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। कुण्ड का सुरम्य स्वरूप व मन्दिरों का निर्माण 1856 में महाराजा भगवन्तसिंह जी के कार्यकाल की देन है। यह स्थल मान्धता के पुत्र महाराज मुचुकुण्द और भगवान कृष्ण के यहॉ आगतन की गवाही दे रहा है। इसका उल्लेख विष्णु पुराण के पंचम अंश के 23वें अध्याय में व श्रीमद्भागवत के दशम स्कंद के 51वें अध्याय में मिलता हैं।

## *इतिहास के आयने में*

त्रेता युग में महाराजा मान्धाता के तीन पुत्र हुए– अमरीष, पुरू और मुचुकुण्द। युद्ध नीति में निपुण होने से देवासुर संग्राम में इन्द्र ने महाराज मुचुकुण्द को अपना सेनापति बनाया। युद्ध में विजय श्री मिलने के बाद महाराज मुचुकुण्द ने विश्राम की इच्छा प्रकट की। देवताओं ने वरदान दिया कि जो तुम्हारे विश्राम में खलल डालेगा, वह तुम्हारी नेत्र ज्योति से वहीं भस्म हो जायेगा। देवताओं से वरदान लेकर महाराज मुचुकुण्द श्यामाश्चल पर्वत(जहॉ अब मौनी सिद्ध बाबा की गुफा है) की एक गुफा में आकर सो गयें। इधर जब जरासंधने कृष्ण से बदला लेने के लिए मथुरा पर 18 वीं बार चढ़ाई की तो कालियावन भी युद्ध में जरासंध का सहयोगी बनकर आया। कालियावन महर्षि गार्ग्य का पुत्र व म्लेक्ष्छ देश का राजा था। वह कंश का भी परम मित्र था। भगवान शंकर से उसे युद्ध में अजय का वरदान भी मिला था। शंकर ने वरदान को पूरा करने के लिए कृष्ण रण क्षेत्र छोड़कर भागे। तभी कृष्ण को ***रणछोड़*** भी कहा जाता है। कृष्ण को भागता देख कालियावन ने उनका पीछा किया। मथुरा से करीब सवा सौ किमी दूर तक आकर श्यामाश्चल पर्वत की गुफा में आ गये जहॉ मुचुकुण्द महाराज जी सो रहे थे। कृष्ण ने अपनी पीताम्बरी मुचुकुण्द जी के ऊपर डाल दी और खुद एक चट्टान के पीछे छिप गये। कालियावन भी पीछा करते करते उसी गुफा मे आ गया। दंभ मे भरे कालियावन ने सो रहे मुचुकुण्द जी को कृष्ण समझकर ललकारा। मुचुकुण्द जी जगे और उनकी नेत्र की ज्वाला से कालियावन वहीं भस्म हो गया। यहॉ भगवान कृष्ण ने मुचुकुण्द जी को विष्णुरूप के दर्शन दिये। मुचुकुण्द जी दर्शनों से अभिभूत होकर बोले–हे भगवान्! तापत्रय से अभिभूत होकर सर्वदा इस संसार चक्र में भ्रमण करते हुए मुझे कभी शांति नहीं मिली। देवलोक का बुलावा आया तो वहॉ भी देवताओं को मेरी सहायता की आवश्यकता हुई। स्वर्ग लोक में भी शांति प्राप्त नही हुई। अब मै आपका ही अभिलाषी हूॅ कृष्ण के आदेश से महाराज मुचुकुण्द जी ने पॉच कुण्डीय यज्ञ किया। यज्ञ की पूर्णाहुति ऋषि पंचमी के दिन हुई। यज्ञ में सभी देवी–दवताओ व तीर्थों को बुलाया गया। इसी दिन कृष्ण से आज्ञा लेकर महाराज मुचुकुण्द गंधमादन पर्वत पर तपस्या के लिए प्रस्थान कर गये। वह यज्ञ स्थल आज पवित्र सरोवर के रूप में हमें इस पौराणिक कथा का बखान कर रहा है। सभी तीर्थो का नेह जुड जाने से इसे तीर्थों का भांजा भी कहा जाता है। हर वर्ष ऋषि पंचमी व बलदेव छठ को यहॉ ***लक्खी मेला*** लगता है। मेले में लाखों की तादाद में श्रद्धालु आते हैं। शादियों की मौरछड़ी व कलंगी का विसर्जन भी यहॉ करते है। माना जाता है कि यहॉ स्नान करने से चर्म रोग सम्बन्धी समस्त पीड़ाओं से छुटकारा मिलता है।

तीर्थराज मुचुकुण्द का मुख्य आकर्षण चार मन्दिरों में निहित है।

## 1. लाड़ली जगमोहन मन्दिर

मुचुकुण्द के पूर्वी–दक्षिणी घाट पर स्थित तीन मंजिल का यह विशाल मन्दिर धौलपुर के लाल पत्थरों से जड़ित है और शिल्पकला व नक्काशी का नायाब नमूना है।

*रियासत दीवान राजधरजू कन्हैयालालजी* ने राज खजाने से इस मन्दिर क निर्माण कराया था। इस मन्दिर की स्थापना *अषाढ़ कृष्ण चतुर्थी सम्वत् 1899* को की गई थी।

मन्दिर में प्रवेश के बाद चौक से करीब तीन फीट ऊॅचाई पर लाडली जगमोहन का गर्भग्रह है। भगवान श्री कृष्ण ने गोर्वधन पर्वत को उठा कर ग्वाल बालों की रक्षा की। साथ ही बांसुरी बजाकर गोकुलवासिंयों को इस कदर मोहित किया कि वे इन्द्र के भय को भूल गये। तब कृष्ण ***जगमोहन*** कहलायें। चौक मे मध्य करीब 7 फीट ऊॅचाई पर अष्टकोण में शिवालय है जहॉ पंचमुखी शिवलिंग शिव परिवार के साथ स्थापित है। शिवालय के दाहिनी ओर हनुमानजी व राम जानकी, बलराम विराजमान है।

लाड़ली जगमोहन मन्दिर की ओर से हर माह की पूर्णिमा के अवसर पर मुचुकुण्द में ***दीपदान और माहआरती*** के बाद भण्डारा आयोजित किया जाता है। तथा अमावस्या को तीर्थराज मुचुकुण्द सरोवर की ***परिक्रमा*** का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त श्रीकृष्ण जन्मोत्सव विशेष पर्व के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है।

## 2. राजगुरू मन्दिर

तीर्थराज मुचुकुन्द के दक्षिण में स्थित इस मन्दिर में श्री जगन्नाथ जी महाराज की स्थापना सम्वत् 1898 के लगभग महाराजा भगवन्तसिंह जी द्वारा कराई गई। इस मन्दिर में मुख्य विग्रह श्री जगन्नाथ जी महाराज, श्री वलरामजी महाराज उनकी बहन सुभ्रदा जी, रामचन्द्रजी, श्री लक्ष्मण जी, श्री जानकी सहित अनेक विग्रह सिंघासन पर सुशोभित है।

*इस मन्दिर को बैकुण्ठ वासी महाराजा भगवन्त सिंह जी के द्वारा राजगुरू मन्दिर की उपाधि दी गई थी इस कारण इस मन्दिर को राजगुरू मन्दिर के नाम से जाना जाता है।*

## 3. मन्दिर रानीगुरू

मन्दिर श्री मदनमोहन जी मुचुकुण्द सरोवर के अग्नि कोण में स्थापित हैं। इस मन्दिर की स्थापना संवत् 1899 के करीब तत्कालीन महारानी धौलपुर विदोखरनी के द्वारा कराई गई थी। इस मन्दिर में विग्रह श्री मदनमोहन जी एवं श्री राधाजी, अनेक विग्रहों सहित गर्भगृह में स्थापित हैं।

*इस मन्दिर को महारानी जी के द्वारा रानीगुरू की उपाधि दी गई थी। इसी कारण आज इस मन्दिर को रानीगुरू मन्दिर के नाम से जाना जाता है।*

## 4. शेर शिकार गुरूद्वारा

मुचुकुण्द सरोवर के किनारे पर सिक्ख धर्मावलम्बियों का धार्मिक स्थल है जो शेर शिकार गुरूद्वारा के नाम से जाना जाता है। *बताया जाता है कि 4 मार्च 1612 को सिक्खों के छठे गुरू हरगोविन्द सिंह जी ग्वालियर से जाते समय यहॉ ठहरे थ। उस समय यहॉ घना जंगल था। उन्होने अपनी तलवार के एक ही वार से यहॉ शेर का शिकार किया था। इस लिए इस गरूद्वारे को शेर शिकार गुरूद्वारा कहा जाता है।*

## *सम्प्रदायिक सौहार्द*

*बाबा अब्दाल शाह की मजार*

मुचुकुण्द मार्ग पर सरोवर से पहले ही पहाडी पर अब्दाल शाह रहमतुल्ला अलेह सूफी संत की मजार हैं। पहाडी पर चढने के लिए पक्की सडक व सीढ़ियॉ बनी हुई है जो काफी ऊॅचाई पर हैं। उसी पहाड़ी पर मौनी बाबा की गुफा भी हैं। जनश्रुति के अनुसार अब्दाल शाह रहमतुल्ला व मौनी बाबा की एक बार भेंट हुई थी। दोनों ही परोपकारी संत थे। इसी पहाडी पर ऊपर की ओर अब्दाल शाह ने अपना ठिकाना बना लिया। यहॉ जैसी सम्प्रदायिक सौहार्द कही नहीं मिलेगी। प्रतिवर्ष भादों सुदी छठ को मुचुकुण्द मेले में आने वाले लाखो श्रद्धालु बाबा की मजार पर शीश झुकाते हैं। प्रबन्ध कमेटी की ओर से यहॉ उस दौरान कब्बाली का कार्यक्रम भी आयोजित किया जाता है।